Date: / /

{ साहित्य दर्पण (प्रथम परिच्छेद) }

* विश्वनाथ कविराज : एक परिचय

साहित्यरूपी सागर के कर्णधार कविसूक्ति रत्नाकर तथा अष्टादश भाषा वारविलासिनी भुजङ्ग आदि उपाधियों से विभूषित कविराज ने अपने ग्रंथ 'साहित्यदर्पण' ने अपनी सरलता, बोधगम्यता तथा व्यापकता के कारण बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। इन ग्रंथ में काव्य के सभी तत्वों का विवेचन है। इस ग्रंथ में श्रव्य काव्यों के पूर्ण विवरण के साथ-साथ दृश्य काव्यों (रूपकों) की विभिन्न विशेषताओं और भेदो का भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

-:- विश्वनाथ का जीवनवृत तथा समय :-

विश्वनाथ ने अपने ग्रंथों में अपना स्वल्प परिचय दिया है। इस परिचय से यह विदित होता है कि वे उत्कल के किसी प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। विश्वनाथ के प्रपितामह का नाम 'नारायण' था। नारायण स्वयं भी महान विद्वान थे, और उन्होंने अलङ्कारशास्त्र पर एक ग्रंथ की रचना की थी।

" तत्प्राणत्वं मास्मदवृद्ध प्रपितामह सहृदयगोष्ठी कविपण्डितमुख्य श्री नारायण पादैरूक्तम् " ।।

Date: / /

विश्वनाथ के पिता का नाम 'चन्द्रशेखर' था। साहित्यदर्पण के अन्त में इनका उल्लेख है। चन्द्रशेखर भी उत्तम कवि और विद्वान थे। इन दो ग्रंथों- 'पुष्पमाला' और 'भाषार्णव' का उल्लेख विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' में किया है। अपने पिता के अनेक श्लोकों को भी इन्होंने साहित्यदर्पण में उद्धृत किया है।

"श्री चन्द्रशेखर महाकवि चन्द्रसूनु श्री विश्वनाथ कविराजकृतं प्रबन्धम।
साहित्यदर्पणममुं सुधियो विलोक्य साहित्य तत्वमखिलं सुखमेव वित्तं।।"

विश्वनाथ कविराज और आलंकारिक दोनों हैं। सम्भवतः कवि पहले और आलंकारिक बाद में। विश्वनाथ कविराजप्रणित 'काव्यप्रकाशदर्पण' की यह उक्ति यह दर्शाती है, कि इनके पिता और पितामह कलिङ्ग देश के उच्चाधिकारी रहे हों।

* विश्वनाथ की रचनाएँ:- विश्वनाथ ने प्रचुर मात्रा में साहित्य का सृजन किया है। इनकी प्रसिद्ध रचना 'साहित्यदर्पण' है। साहित्यशास्त्र पर लिखा गया यह ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है। विश्वनाथ केवल काव्यशास्त्र के आचार्य नहीं थे, अपितु श्रेष्ठ कवि भी थे। 'साहित्यदर्पण' के उद्धरणों से उनके काव्यों का बोध होता है, जिनका विवरण इस प्रकार है।

(1) राघवविलास महाकाव्य, (2) कुवलयाश्वचरित, (3) प्रभावती, (4) चन्द्रकला, (5) प्रशस्तिरत्नावली (6) साहित्यदर्पण (7) काव्यप्रकाश दर्पण (8) नरसिंहविजय।